बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (SOCIAL DEVELOPMENT IN CHILDHOOD)

हरलॉक (Hurlock) ने बाल्यावस्था में बालक के सामाजिक विकास का निम्न चित्र अंकित किया है-

1. लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करता है। यह वह एक नए से अनुकूलन करना, सामाजिक कार्यों में भाग लेना और नए मित्र बनाना सीखता है।
2. अनुकूलन करने के उपरान्त, बालक के व्यवहार में उन्नति और परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। फलस्वरूप, उसमें स्वतन्त्रता, सहायता और उत्तरदायित्व के गुणों का विकास होने लगता है।

3. विद्यालय में बालक किसी-न-किसी टोली का सदस्य हो जाता है। यह टोली उसके वस्त्रों के रूपों, खेल के प्रकारों और उचित-अनुचित के आदर्शों को निर्धारित करती है। इस प्रकार, बालक के सामाजिक विकास को एक नवीन दिशा प्राप्त होती है।

4. टोली, बालक में अनेक सामाजिक गुणों का विकास करती है। इन गुणों पर प्रकाश डालते हुए हरलॉक (Hurlock) (p. 293) ने लिखा है- "**टोली बालक के आत्म-नियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता, नेता के प्रति भक्ति, दूसरों के प्रति सद्भावना आदि गुणों का विकास करती है।**"

5. **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow) के अनुसार इस अवस्था में बालक अपने शिक्षक का सम्मान तो करता है, पर उसका परिहास करने की अपनी प्रवृत्ति का दमन नहीं कर पाता है।

6. **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow) के अनुसार इस अवस्था में बालक को अपने प्रिय कार्यों (Hobbies) में बहुत अधिक रुचि हो जाती है, पर बालकों और बालिकाओं के इन कार्यों में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने लगता है, उदाहरणार्थ, बालकों को जीवनियाँ पढ़ने और बालिकाओं को वाद्य यंत्र बजाने में रुचि होती है।

7. **एलिस क्रो** (Alice Crow) (p. 79) के अनुसार बालक में नई बातों की खोज करने की रुचि उत्पन्न हो जाती है। वह अपनी टोली, पडौस विद्यालय और अन्य स्थानों के व्यक्तियों के सम्बन्ध में नई बातों की खोज करता है और अपने साथियों को उन्हें बताने में गर्व तथा आनन्द का अनुभव करता है।

8. **क्रो एवं क्रो** (Crow and Crow) (op. cit. pp. 142-143) ने लिखा है- **"6 से 10 वर्ष तक बालक अपने वांछनीय या अवांछनीय व्यवहार में निरन्तर प्रगति करता रहता है। वह बहुधा उन्हीं कार्यों को करता है जिनके किये जाने का कोई उचित कारण नहीं जान पड़ता है।"**